International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बेरोजगारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

Anita Goyal
Assistant Professor (Guest Faculty)
Vaish College, Bhiwani.

सारांश :– मनुष्य का प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार होना, परन्तु उसे काम उपलब्ध न होना इस स्थिति को बेरोजगारी कहा जाता है। बेरोजगारी व्यक्ति की कार्यकुशलता में कमी लाती है। इससे समाज में धन और सम्पत्ति में विषमताएँ बढ़ती हैं। अमीर और अधिक अमीर तथा गरीब और अधिक गरीब होता जाता है। बेरोजगारी देश के आर्थिक विकास में बाधा है और यह हमारी GDP को कम करती है। बेरोजगारी का मुख्य कारण जनसंख्या का तेजी से बढ़ना, बचत व निवेश कम होना है यदि हम बेरोजगारी को कम करना चाहते हैं तो हमें जनसंख्या वृद्धि पर अंकुश लगाना होगा साथ ही साथ बचत व निवेश बढ़ाकर पूँजी निर्माण बढ़ाना होगा ताकि रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हो।

संकेत शब्द :– (बरोजगारी, GDP, 'है और नहीं है', आर्थिक विकास)

भूमिका :– बेरोजगारी का सामान्य अर्थ है बिना रोजगार के। बेरोजगारी उस स्थिति का सूचक है जब व्यक्ति के पास शारीरिक व मानसिक योग्यता है परन्तु फिर भी उसे काम उपलब्ध नहीं होता। बेरोजगारी मनुष्य की कार्यकुशलता को प्रभावित करती है। बेरोजगार व्यक्ति, प्रचलित मजदूरी पर काम करना चाहता है परन्तु फिर भी उसे काम उपलब्ध नहीं होता है। यहाँ बेरोजगार व्यक्तियों में हम बच्चे, बीमार, बूढ़ों, विद्यार्थी आदि को शामिल नहीं करते हैं। बेरोजगार व्यक्ति उन्हीं को माना गया है जो काम करने में सक्षम है तथा वर्तमान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

में प्रचलित मजदूरी दर पर काम करना चाहते हैं परन्तु फिर भी उन्हें काम उपलब्ध नहीं हो रहा है। इसके अंतर्गत 15 से 60 वर्ष की आयु समूह के व्यक्तियों को शामिल किया जाता है अर्थात् 15 वर्ष से छोटे तथा 60 वर्ष से ऊपर के व्यक्तियों को बेरोजगार नहीं माना जाता है।

उद्देश्य :–

- बेरोजगारी से देश का आर्थिक विकास अवरुद्ध होता है।
- बेरोजगारी से देश में गरीबी बढ़ती है।
- बेरोजगारी से है 'और नहीं है' (Haves and Have notes) का अंतर बढ़ता है।
- बेरोजगारी व्यक्ति की कार्यकुशलता में कमी लाती है।
- बेरोजगारी देश की GDP में कमी लाती है क्योंकि बेरोजगार व्यक्तियों के पास कोई काम नहीं है इसलिए वे केवल उपभोग में वृद्धि करते हैं, उत्पादन में नहीं।

बेरोजगारी की प्रवृत्तियाँ :–

बेरोजगारी की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न बेरोजगारी दरों की आपस में तुलना की जाती है जिसे निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

2017–18 में बेरोजगारी दरें (प्रतिशत में)

क्षेत्र	पुरूष	महिलाएँ	कुल
ग्रामीण क्षेत्र	5.8	3.8	5.3
शहरी क्षेत्र	7.1	10.8	7.8
कुल	6.2	5.7	6.1

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वर्ष 2017–18 में ग्रामीण क्षेत्रों में पुरूषों में बेरोजगारी दर 5.8% व महिलाओं में बेरोजगारी दर 3.8% थी जबकि शहरी क्षेत्रों में पुरूषों में बेरोजगारी दर 7.1% व महिलाओं में बेरोजगारी दर 10.8% थी।

विभिन्न राज्यों में बेरोजगारी की दरें अलग–अलग हैं। कुछ राज्यों में बेरोजगारी की दरें इस प्रकार हैं:–

विभिन्न राज्यों में बेरोजगारी की दरें (वर्ष 2017–18, प्रतिशत में)

State राज्य	**Rates of Unemployment** बेरोगारी की दरें		
	Rural (ग्रामीण)	**Urban** (शहरी)	**Total** (कुल)
नागालैंड	21.6	21.1	21.4
गेआ	13.9	13.8	13.9
केरल	10.0	13.2	11.4
हरियाणा	9.3	7.3	8.6
प्ंजाब	7.8	7.7	7.8
उत्तराखंड	6.9	9.5	7.6
ओडिशा	6.9	8.3	7.1
उत्तरप्रदेश	5.5	9.7	6.4
हिमाचल प्रदेश	5.2	8.7	5.5
पश्चिम बंगाल	3.8	6.5	4.6
मेघालय	0.6	6.7	1.5
पूर्ण भारत	5.3	7.8	6.1

(Source : Periodic Labour Force Survey Report, 2017-18)

वर्ष 2017–18 में बेरोजगारी की अधिकतम दर नागालैंड राज्य में 21.4% थी जबकि न्यूनतम दर मेघालय में 1.5% थी। पूरे भारत में बेरोजगारी की औसतन दर 6.1% थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जबकि 1999–2000 में यह 2.9% थी। 2004–05 में 3.6% , 2009–10 में 9.4% तथा 2011–12 में 5.6% थी अर्थात् बेरोजगारी की दर लगातार बढ़ती जा रही है।

बेरोजगारी के कारण :–

बेरोजगारी का सबसे प्रमुख हुई जनसंख्या है। सरकार द्वारा रोजगार वृद्धि के लिए जितनी योजनाएँ बनाई जाती हैं, जनसंख्या वृद्धि के कारण वे वांछित परिणाम नहीं दे पाती। श्रम प्रधान तकनीकों के स्थान पर पूँजी, प्रधान तकनीकों के प्रयोग से बेरोजगारी बढ़ती है। परतंत्रता से पहले भारत में लघु व कुटीर उन्नत अवस्था में थे परन्तु जब से भारत पर अंग्रेजों ने शासन किया उन्होंने ऐसी व्यापार नीति अपनाई जिससे हमारे लघु व कुटीर उद्योगों का पतन हुआ और बेरोजगारी में वृद्धि हुई क्योंकि इन उद्योगों के पतन से हजारों–लाखों लोग बेरोजगार हो गए। हमारी शिक्षा प्रणाली भी दोषपूर्ण है। विद्यार्थी डिग्री प्राप्त करने में लगे रहते हैं परन्तु उन्हें व्यावसायिक शिक्षा के बारे में ज्ञान नहीं होता इसलिए वे बेरोजगार रहते हैं। पहले महिलाओं की रोजगारी में कोई भागीदारी नहीं थी लेकिन महिलाओं का रोजगार में भाग लेने के कारण भी बेरोजगारी बढ़ी है। देश में बचत कम होने के कारण पर्याप्त मात्रा में निवेश नहीं हो पाता जिससे सभी व्यक्तियों को रोजगार नहीं मिल पाता और देश का आर्थिक विकास भी धीमा रहता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बरोजगारी और हमारी अर्थव्यवस्था :–

बेरोजगारी हमारी अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है। बेरोजगार व्यक्तियों का उत्पादन में कोई योगदान नहीं होता है, वे केवल उपभोग में वृद्धि करते हैं इससे हमारे देश के आर्थिक विकास को धक्का पहुँचता है। बेरोजगारी से गरीबी बढ़ती है। समाज में आय और सम्पत्ति की असमानाताओं में वृद्धि होती है क्योंकि जो व्यक्ति बेरोजगार हैं वह गरीब होता जाता है और रोजगार प्राप्त व्यक्ति अमीर होता जाता है। इससे समाज में 'है और नहीं है' का अंतर बढ़ता जाता है। बेरोजगारी हमारी GDP को कम करती है। बेरोजगारी आर्थिक विकास में बाधक है। बेरोजगारी व्यक्ति की कार्यकुशलता में कमी लाती है। बेरोजगार व्यक्ति गरीबी में जीवन जीने के लिए मजबूर होता है। बेरोजगार लोगों के मन में विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है। कई आतंकवादी संस्थाएँ बेरोजगार लोगों की मजबूरी का फायदा उठाकर उन्हें विभिन्न प्रलोभन देते हैं और उन्हें अपनी संस्था में शामिल करके हमारे राष्ट्र को हानि पहुँचाते हैं।

बेरोजगारी को नियंत्रित करने के उपाय :–

भारत जैसे देश में सरकार बेरोजगारी को नियंत्रित करने के लिए विभिन्न योजनाएँ बनाती है परन्तु योजनाएँ बढ़ती जनसंख्या के कारण असफल हो जाती है इसलिए यदि हम बेरोजगारी पर नियंत्रण चाहते हैं तो हमें जनसंख्या पर नियंत्रण करना होगा। बेरोजगारी पर नियंत्रण करने के लिए हमें पूँजी प्रधान तकनीकों के स्थान पर श्रम प्रधान तकनीकों को अपनाना होगा क्योंकि जिस देश की जनसंख्या अधिक हो वहाँ श्रम प्रधान तकनीकें ही

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपयुक्त होगी साथ ही सरकार को बचत व निवेश बढ़ाकर अधिक से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाना होगा। ग्रामीण क्षेत्र में केवल कृषि पर निर्भर न रहकर सहायक उद्योगों पर बल देना होगा। लघु व कुटीर उद्योगों के विकास को बढ़ावा देना होगा क्योंकि इनमें कम मात्रा में निवेश करके अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाया जा सकता है। हमारी शिक्षा को व्यावसायिक शिक्षा में बदलना पड़ेगा ताकि विद्यार्थी केवल डिग्री ही प्राप्त न करें बल्कि हाथ से काम कैसे किया जाता है यह भी समझें और आगे चलकर स्व–रोजगार स्थापित करे। सरकार के द्वारा गरीबों को कम ब्याज की दर पर ऋण उपलब्ध करवाया जाएँ ताकि गरीब लोग कोई न कोई व्यवसाय शुरू कर सके और आर्थिक विकास में योगदान दे। सरकार को निर्यातों को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए क्योंकि निर्यात क्षेत्र में भी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर उत्पन्न होगें। सरकार को ऐसे उद्योगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए जिससे परिपक्वता अवधि कम हो और तुरंत लाभ मिले ताकि उस लाभ का पुनः निवेश कर रोजगार के अधिक अवसर उपलब्ध हो सकें।

निष्कर्ष :– संक्षेप में बेरोजगारी की समस्या एक गंभीर आर्थिक समस्या है। यह एक राष्ट्र की नहीं बल्कि पूरे विश्व की समस्या है। इसके समाधान के लिए सरकार के साथ–साथ निजी क्षेत्र, गैर–सरकारी संगठनों को भी आगे आना होगा 'और उन्हें लोगों को पर्याप्त रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने होगें।

REFERENCES:

- Indian Economy (Datt and Sundaram): Gaurav Dutt, Ashwani Mahajan.
- Indian Economy : V.K. OHRI, T.R. Jain
- Micro and Macro Economics: T.R. Jain, V.K. OHRI.
- Inflation, Unemployment and Monetary Policy: Robert M.solow, John B.Taylor.
- Vikas Ka Arthshastra Avan Aayojan : M.L. Jhingan.
- Education, Unemployment and Masculinities in India
  Craig Jeffrey, Patricia Jeffery and Roger Jeffery.
- India's Employment Crisis and What the Future holds : Goutam Das
- Employment and Unemployment In India : E.T. Mathew
- How to cope with Unemployment, find a job in Any Economy and save money : Henderson RN Ronald D.
- Poverty and Unemployment: B.D. Sharma.
- Economic and Social Issues in India: Dhrub Kumar.
- Indian Economic Problems: Dr. Chaturbhuj Mamoria, Dr. Satish Kumar Saha.
- Industrial Unemployment : A Statistical Study of its Extent and Causes : Ernest Smith Bradford.
- Periodic Labour Force Survey Report: 2017-18.